INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
(Peer Reviewed -Referred -Open Access Journal)
ISSN: 2945-3127
Vol. 2026, Issue -2

मनोवैज्ञानिक और संज्ञानात्मक प्रभाव ऑनलाइन शिक्षण पद्धति बनाम पारंपरिक शिक्षण पद्धति के बीच तुलना

प्रियंका कुमारी[1] & **डॉ. विजय कुमार गुप्ता**[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, साई नाथ विश्वविद्यालय, रांची, झारखण्ड, नामांकन संख्या-**2250100871.**

[2]शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, साई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड.

DOI: https://doi.org/10.56815/IRJAHS.v(2026)i2.20-25

Abstract:

ऑनलाइन शिक्षण विधि एक ऐसी शिक्षण विधि है जो शिक्षा को प्रभावशाली बनाने में मदद करती है। इसके अंतर्गत कंप्यूटर सॉफ्टवेयर इंटरनेट मोबाइल एप आदि आते हैं। इसके अलावा परंपरागत शिक्षण विधि वह शिक्षा प्रणाली है जिसमें शिक्षक एवं छात्र आमने सामने बैठ कर शिक्षण प्रक्रिया करते हैं जिसमें शिक्षक पुस्तकों एवं ब्लैक बोर्ड चॉक की सहायता से शिक्षण बिंदु को व्याख्यान विधि की सहायता से छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है। ऑनलाइन शिक्षण विधि व्यक्तिगत रूप से अनुकूल है क्योंकि यह छात्रों को उनकी व्यक्तिगत क्षमता योग्यता रुचि समझ आदि के आधार पर शिक्षा प्रदान करती है जबकि परंपरागत शिक्षण विधि सभी छात्रों को एक समान शिक्षा प्रदान करती है चाहे वह उच्च बुद्धि लब्धि के हो या निम्न बुद्धि लब्धि के परंपरागत शिक्षण विधि में छात्रों की रुचि योग्यता क्षमता को विशेष महत्व नहीं दिया जाता। ऑनलाइन शिक्षण विधि का प्रयोग छात्रों द्वारा आसानी से किसी भी समय किसी भी स्थान पर किया जा सकता है। अतः यह लचीली शिक्षण विधि है जबकि पारंपरिक शिक्षण विधि की प्रकृति कठोर है क्योंकि इस छात्रों द्वारा किसी निश्चित समय स्थान पर ही प्रयोग किया जा सकता है। प्रभावशीलता की दृष्टि से ऑनलाइन शिक्षण विधि पारंपरिक शिक्षण विधि से अधिक प्रभावशील है। ऑनलाइन शिक्षण विधि की सहायता से छात्र कठिन से कठिन शिक्षण बिंदु को इंटरनेट वेब ब्राउजर एवं अप आदि के माध्यम से अपनी योग्यता एवं शिक्षक गति के अनुसार पढ़ सकते हैं। इसमें छात्र ऑडियो वीडियो नवीन शिक्षण पद्धतियों आदि के माध्यम से अध्ययन करके अपने समस्याओं का हाल स्वयं कर सकते हैं। इसके विपरीत परंपरागत शिक्षण विधि में किसी भी शिक्षण बिंदु की प्रभावशीलता केवल शिक्षक की योग्यता अनुभव एवं क्षमता पर निर्भर करता है। लागत एवं संसाधन की दृष्टि से ऑनलाइन शिक्षण विधि अधिक महंगा एवं खर्चीला है जबकि परंपरागत शिक्षण विधि कम खर्चीली एवं आसानी से उपलब्ध हो जाती है।

Key words: *ऑनलाइन शिक्षण, परंपरागत शिक्षण, लचीली शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षण में प्रभावशीलता।*

परिचय

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य के संज्ञानात्मक विकास में सहायता करती है शिक्षा मनुष्य को जीवन पर्यंत आगे बढ़ाने में सहायता करती है साथ ही अपने जीवन में आने वाली समस्याओं को सुलझाने एवं उसमें समायोजन करने में सहायता करती है। शिक्षा के क्षेत्र में परंपरागत शिक्षण विधि महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
is licensed under Attribution-NonCommercial 4.0 International

INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES

(Peer Reviewed -Referred -Open Access Journal)

ISSN: 2945-3127
Vol. 2026, Issue -2

पारंपरिक शिक्षण पद्धति एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जिसमें छात्र एवं शिक्षक आमने-सामने बैठकर व्याख्यान विधि द्वारा चौक बोर्ड एवं पुस्तक के माध्यम से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया करते हैं। इसमें निश्चित विषय वस्तु (सिलेबस) को निश्चित समय सीमा में किसी निश्चित स्थान पर प्रदान किया जाता है। पारंपरिक शिक्षण पद्धति मुख्य रूप से शिक्षक केंद्रित है जिसमें शिक्षक मुख्य वक्ता होता है एवं छात्र श्रोता होता है जो उन्हें ध्यान पूर्वक सुनते हैं। इस विधि में छात्र एवं शिक्षक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए मुख्य रूप से पाठ्य पुस्तकों पर निर्भर रहते हैं। इसमें कक्षा आधारित शिक्षण अर्थात शिक्षक एवं छात्रों का भौतिक रूप से कक्षा में उपस्थित होना आवश्यक है।

परंतु वर्तमान में बदलते समय के अनुसार संकुचित शिक्षा प्रणाली द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया करना चुनौती पूर्ण माना जा सकता है। वर्तमान समय में शिक्षा जगत इतना अधिक आगे बढ़ गया है कि केवल पारंपरिक तारिक को द्वारा शिक्षक करना कहीं ना कहीं छात्रों को आगे बढ़ाने में बाधा उत्पन्न कर सकता है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण पद्धति का प्रयोग महत्वपूर्ण है। ऑनलाइन शिक्षा एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जिसमें तकनीक का प्रयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक व्यापक, प्रभावशाली एवं बेहतर बनाने में मदद करती है। ऑनलाइन शिक्षण छात्रों के लिए अधिक सुसंगत है क्योंकि इसके द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा छात्रों को उनकी रुचि, क्षमता, योग्यता, तीव्रता एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर प्रदान की जाती है। ऑनलाइन शिक्षण पद्धति को शामिल करते हुए शिक्षण संबंधी पाठ्यक्रम में कई बदलाव किए गए विशेष रूप से गणित, विज्ञान, तकनीकी शिक्षण आदि ताकि इसकी सहायता से छात्र वर्तमान समय के साथ कम से कदम मिलाकर चल सके।

उद्देश्य

- शिक्षण के तरीके को और अधिक प्रभावशाली सरल स्पष्ट एवं सुसंगत बनाना
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में लचीलापन प्रदान करना
- व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को उनकी रुचि योग्यता क्षमता एवं आवश्यकता के अनुसार पढ़ाना

ऑनलाइन शिक्षण बनाम पारंपरिक शिक्षण पद्धति के बीच तुलना

पारंपरिक शिक्षण पद्धति पुराने समय से ही चलने वाली महत्वपूर्ण शिक्षण विधियों में से एक है जिनमें व्याख्यान विधि प्रश्न उत्तर विधि पुस्तक आधारित शिक्षण विधि कक्षा आधारित शिक्षण आदि आते हैं यह शिक्षण विधियां कक्षा शिक्षण का आधार है परंतु बदलते समाज के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव लाना आवश्यक है अतः ऑनलाइन शिक्षण पद्धतियां वर्तमान समय में काफी व्यापक रूप से प्रयोग की जा रही है जो छात्रों को नवीन

INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
is licensed under Attribution-NonCommercial 4.0 International

INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
(Peer Reviewed -Referred -Open Access Journal)
ISSN: 2945-3127
Vol. 2026, Issue -2

जानकारी प्रदान करने में सहायता करती है। यह छात्रों को उनकी क्षमता के अनुसार पढ़ने में मदद करती है विभिन्न तकनीकों से जोड़ती है एवं कम समय में अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करती है।

	बिंदु	**ऑनलाइन** शिक्षण पद्धति	पारंपरिक शिक्षण पद्धति
1	केन्द्रिता	छात्र केंद्रित	शिक्षक केंद्रित
2	प्रकृति	शिक्षण में लचीलापन	सीमित लचीलापन
3	महत्व	व्यक्तिगत विभिन्नता को महत्व	कक्षागत अध्ययन को महत्व
4	उपलब्धता	24 घंटे एवं 7 दिन उपलब्ध	समयबद्ध (स्कूल समय)
5	समय एवं सीखने की गति	छात्र अपने सीखने की गति के अनुसार एक समय में अधिक से अधिक विषय वस्तु सीख सकते हैं	पारम्परिक शिक्षण पद्धति में किसी प्रकरण को सीखने के लिए एक निश्चित समय सीमा प्रदान की जाती है जिसमें एक समय में अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं है
6	पाठ्यक्रम	परिवर्तनशील	निश्चित
7	प्रोत्साहन	केवल विषय वस्तु सम्बंधित ज्ञान प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित	आलोचनात्मक चिंतन टीमवर्क एवं कौशलों को सीखने के लिए प्रोत्साहित करना
8	निर्भरता	तकनीकी संसाधनों जैसे बिजली तकनीकी उपकरण इंटरनेट एक्सेस एवं अन्य संसाधनों पर अधिक निर्भरता	तकनीकी संसाधनों पर निर्भरता नहीं
9	सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य	सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की कमी	सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों में एकीकरण
10	अंतःक्रिया	शिक्षक छात्र अंतःक्रिया में कमी	शिक्षक छात्र अंतःक्रिया मजबूत

INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
is licensed under Attribution-NonCommercial 4.0 International

ISSN: 2945-3127
Vol. 2026, Issue -2

जांच परिणाम

- वर्तमान समय में होने वाले बदलावों एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ऑनलाइन शिक्षण पद्धति अधिक महत्वपूर्ण मानी जा सकती है यह निम्न बुद्धि एवं उच्च बुद्धि लब्धि वाले छात्र दोनों को उनके स्तर के अनुसार शिक्षण प्राप्त करने में सहायता करती है।
- ऑनलाइन शिक्षण पद्धति का प्रयोग छात्रों द्वारा 24'7 किया जा सकता है जिसके प्रयोग के लिए कई लर्निंग प्लेटफॉर्म उपलब्ध है जबकि पारंपरिक शिक्षण पद्धति का लाभ छात्रों द्वारा केवल निश्चित समय सीमा में ही किया जा सकता है।
- ऑनलाइन शिक्षण पद्धति में छात्रों की सहभागिता पारंपरिक शिक्षण पद्धति की तुलना में अधिक सक्रिय है।
- ऑनलाइन शिक्षण पद्धति में भाषा एवं स्थान संबंधी कोई प्रतिबंध नहीं है इसकी सहायता से छात्र किसी भी भाषा में एवं किसी भी स्थान पर अध्ययन कर सकते हैं।

निष्कर्ष

ऑनलाइन शिक्षण पद्धति एक नवीन शिक्षण पद्धति है जो शिक्षा को अधिक व्यक्तिगत तकनीकी रूप से सक्षम एवं लचीला बनाती है परंतु यह सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास में विशेष योगदान नहीं देती जो परंपरागत शिक्षण विधि का महत्वपूर्ण पक्ष है अतः भविष्य में ब्लेंडेड लर्निंग द्वारा इन दोनों का सामूहिक रूप से प्रयोग किया जा सकता है।

सीमाएं

- शिक्षण प्रक्रिया में तकनीकों पर अत्यधिक निर्भरता।
- गोपनीयता एवं सुरक्षा का जोखिम।
- छात्रों की निष्क्रियता एवं शिक्षकों पर अधिक कार्यभार।
- समय पाठ्यक्रम स्थान की बाध्यता।

सुझाव

- ब्लेंडेड लर्निंग को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में स्थान दिया जाना चाहिए।
- छात्रों को ऑनलाइन शिक्षण पद्धतियों द्वारा शिक्षक के साथ-साथ परंपरागत शिक्षण पद्धति द्वारा शिक्षण के लिए

CC BY NC

INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
is licensed under Attribution-NonCommercial 4.0 International

भी प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि उनमें तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का भी विकास हो सके।

- छात्रों को ज्ञान प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम पुस्तकों का सहारा लेना चाहिए इसके बाद ज्ञान का विस्तार करने के लिए अन्य तकनीकों का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि पुस्तक द्वारा अध्ययन छात्रों को गहन अध्ययन के लिए प्रेरित करती है एवं उनमें एकाग्रता लाती है।

संदर्भ

1. अस्थाना, विपिन, 2008, अधिगम के लिए आकलन, अग्रवाल पब्लिकेशन।
2. कपिल, एच. के, 2012, अधिगम विधियां, राखी प्रकाशन।
3. चतुर्वेदी, डॉ. आर. ए, 1979, प्रभावशाली शिक्षकों के लिएमानदंड।
4. कपिल, एस. के. अनुसंधान विधियां, राखी प्रकाशन।
5. भटनागर, डॉ. आर. पी. 1979, ईगल बुक्स इंटरनेशनल, मेरठ।
6. गुप्ता, एस. पी. 1979, सांख्यिकीय विधियां, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
7. भटनागर, सुरेश, शैक्षिक प्रबंधन की समस्याएं, राधिका कंप्यूटर्स, जागृति विहार, मेरठ।
8. मथुर, डॉ. एस. एस. 1979, शिक्षण कला एवं शैक्षिक तकनीकी, बी. पी. प्रिंटर्स, आगरा।
9. मित्तल, डॉ. संतोष, शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा कक्ष प्रबंधन, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
10. सरीर एवं सरीन, 1979, शैक्षिक अनुसंधान की विधियां, अग्रवाल पब्लिकेशन।
11. अग्रवाल, जे. सी. शिक्षा तकनीकी, बी. पी. प्रिंटर्स आगरा-2
12. अग्रवाल, जे. सी. शैक्षिक प्रौद्योगिकी की आवश्यकता एवं विकास, पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
13. मिश्रा, डॉ. सीतेश्वरी, (2022), भूमंडलीय समय में ई-लर्निंग का उच्च शिक्षा पर प्रभाव के सम्बन्ध में शोध अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च, 04, 2348-795.
14. सन, ए. एवं शैन, एक्स. (2016), ऑनलाइन एजुकेशन एन्ड इट्स इफेक्टिव प्रैक्टिस (ए रिसर्च रिव्यु, जर्नल ऑफ इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी एजुकेशन) रिसर्च, 15, 10, 28945-3502.
15. शुक्ला, दीप एवं चतुर्वेदी, वंदना, 2024, सर्वेक्षण माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों का आईसीटी के प्रति जागरूकता एवं शिक्षण में प्रभावशीलता का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 6,

2582-2160

16.वर्मा, मुकेश, 2023, माध्यमिक स्तर में अध्यनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 11, 2320-2882

17.प्रसाद, रंजन पिंटू, (2022). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सोशल मिडिया के प्रभाव का अध्ययन. 2394-7737.

18.वर्मा, कविता, (2024), सोशल मीडिया का विद्यार्थियों पर प्रभाव, 0976-5255.

INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
is licensed under Attribution-NonCommercial 4.0 International